मित्रो !

माइण्ड यानी मस्तिष्क

मस्तिष्क हर प्राणी के पास है। मस्तिष्क विचारों का खजाना है, क्रिएटिविटी का घर है। इससे हम अच्छा और बुरा सोच सकते हैं। यह हमारे मन पर निर्भर करता है कि मस्तिष्क से हम क्या काम लें।

भारतीय मस्तिष्क हमारे मनीषियों की सतत साधना के बाद विकसित हुआ। भारतीय चिन्तन और मौलिक अभिव्यक्ति पर मुझे महान मूर्तिकार रौदाँ के जीवन की एक घटना याद आ गई।

मूर्तिकार रौदाँ जीवन भर पत्थर की मूर्तियाँ तराशता रहा। ब्राँज की मूर्तियाँ ढालता रहा। विश्व प्रसिद्ध कृति "THINKER" रचना उसी की है। जब रौदाँ भारत आया और यहाँ उसने सर्व प्रथम "नटराज" की मूर्ति देखी तो आश्चर्य चकित रह गया। न कोई रीअलिस्टिक अप्रोच और ना ही अनाटमी। फिर भी नटराज की मूर्ति में एक थिरकन है, एक गति है, एक नयापन है मौलिक मस्तिष्क की सोच है। जब मूर्तिकार रौदाँ अपने अन्तिम समय में था तो एक दिन अचानक जोर-जोर से हँसने लगा और फिर रोने। लोगों के कारण पूछने पर उसने बताया कि मैंने जीवन में सैकड़ों मूर्तियाँ बनाईं। मुझे समाज ने GREAT SCULPTURE भी माना, यश मिला, पर मुझे बहुत दुख: है कि मैंने "नटराज" की तरह एक भी मौलिक मूर्ति नहीं बनाई। रौदाँ से सैकड़ों वर्ष पहले "नटराज" की मूर्ति भारतीय शिल्पियों ने बनाली थी। कैसे थे वे भारतीय क्रिएटिव-शिल्पी ? कैसा समृद्ध था उनका चिन्तन ? सतत साधना के बाद नटराज जैसी कालजयी रचना भारतीय मस्तिष्क ही कर सकता है। यह भारतीय चिन्तन का एक छोटा सा उदाहरण है।

यहाँ चाक्षुषकला (VISUAL-ART) के क्षेत्र में अजन्ता, एलोरा, एलीफैन्टा, खजुराहो, कोणार्क जैसे अनेक कला तीर्थ हैं। यह दुर्लभ रचना उस समय की हैं जब कलाकारों के पास पूरी सुविधाएँ भी नहीं थीं। आज पूरा विश्व इन रचनाओं के आगे नतमस्तक है। अमेरिकन कला पारखी डॉ० वाल्टर स्प्रिंग जीवन भर अजंता का अध्ययन करता रहा। भारतीय कला हमेशा आदर्शवादी, मौलिक चिन्तन पर आधारित रही है। भारत में कला ही नहीं हर विधा क्रिएटिव रही है। यहाँ हर क्षेत्र में विशिष्ट कार्य समाज को सुसंस्कृत, जन कल्याण को

ध्यान मे रख कर किया गया।

यहाँ हर कार्य- "लोका समस्ता सुखनो भवन्तु" को ध्यान में रख कर किया गया।

-"सर्वे भवन्तु सुखना- सर्वेसन्तु निरामय" यहाँ की संस्कृति का मूल था।

भारतीय दार्शनिकों - समाज चिन्तकों ने यहाँ अपने हृदय को इतना विराट बना लिया कि - "वसुधैव कुटुम्बकम्" की धारणा यहीं से पनपी। भारतीय मस्तिष्क को छोड़ कर एसी सोच पूरे विश्व में कहीं नहीं दिखाई देती।

हमारे पूर्वजों ऋषि-मुनियों ने आदर्श समाज के लिए शारीरिक बल के साथ मस्तिष्क- विकास की अनेक पद्धतियाँ विकसित कीं। धर्म, आध्यात्म, योग को जीवन से जोड़ा।

भगवान महावीर - बुद्ध ने आदर्श समाज में सामाजिक सौहर्द और शान्ति के लिए अहिंसा का मंत्र दिया। इन की अहिंसा का अर्थ जीव को मारना तो दूर उसकी कल्पना करना भी पाप था।

भारत में मस्तिष्क से निकले एद विचारों को मूर्त रूप देने के लिए - कर्म पर अधिक बल दिया गया। कर्म वह है —

- जिसका कोई उद्देश्य हो।
- दृण संकल्प हो
- सतत प्रयास हो
- जागरुकता हो
- कार्य कौशल हो।

कर्म के लिए यह पाँच बिन्दु आवश्यक थे। यदि यह नही तो वह क्रिया है। कर्म नहीं हो सकता। कर्म से आत्म शान्ति मिले इसलिए गीता में "कर्मण्य-वाधिका रस्ते मा फलेशु कदाचना" की बात भी की गई है। एक लम्बी विकास प्रक्रिया के बाद भारतीय मस्तिष्क और उसका चिन्तन समाज के सामने आया।

आज विश्व के अधिकतम देश जनतंत्र में आस्था रखते हैं। गणतंत्र में उनका विश्वास है। पर हजारों वर्ष पहले भारत के वैशाली क्षेत्र में लिच्छवी वंशजों ने यहाँ गणतंत्र की स्थापना करली थी। यह विश्व का प्रथम गणतंत्र था। चाणक्य जैसा नीतिज्ञ, कौटिल्य जैसा अर्थशास्त्री आर्यभट्ट जैसा गणितज्ञ और वाराहमिहिर जैसा खगोल शास्त्री भी इसी भूमि की देन हैं जिससे विश्व का विकास सम्भव हुआ। भारत को जगत गुरु और सोने की चिड़िया कहलाने का गौरव भी यहाँ के उत्कृष्ट मस्तिष्क

इतिहास साक्षी है अनेक कारणों से लम्बे समय तक हमारी मास्तिष्क विकास की प्रक्रिया बन्द हो गई। शदियों तक हम गुलाम रहे। हम भटक गए। विश्व के अन्य देशों ने अपने-अपने मास्तिष्क और सोच के साथ विकास किया। उन्होंने वैज्ञानिक उन्नति से भौतिक सुख सुविधाओं को इकट्ठा किया। आज पूरे विश्व में सामाजिक समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। पर्यावरण का संकट, जल की समस्या, नैतिक मूल्यों का ह्रास। अपना वर्चस्व सिद्ध करने के लिए अतंकवाद आदि-आदि।

मित्रों हमारे दार्शनिकों, चिन्तकों ने प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए। वृक्षों, पर्यावरण को जीवन का अंग माना। उनको धर्म में देवताओं के रूप में देखा। पर्यावरण का सन्तुलन बनाए रखने के लिए पशु-पक्षी, जीव जन्तु सब का ध्यान रखा। मोहनजोदाड़ो के उत्खनन में प्राप्त मिट्टी की पशुपति की सील इसका प्रमाण है। वेद, शास्त्रों में अनेक ऋचाएँ और श्लोक हैं। यह भारतीय विशाल दृष्टि का उदाहरण है।

आज सर्व धर्म सम्भाव की बात चल रही है। इतिहास साक्षी है भारत ने शक-हूड़-मुगल और अनेक आक्रमण कारियों को अपने अन्दर समाहित कर लिया। यहाँ इस्लाम, पारसी, ईसाई आदि धर्मों को समान सम्मान है। इसलिए भारतीय संस्कृति सनातन है। तभी तो मशहूर शायर ने कहा है।

यूनान, मिस्र, रोमाँ सब मिट गए जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

मित्रो!

अब हम इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर गए हैं। यह वैज्ञानिक युग है। आज विश्व स्तर पर भारतीय प्रतिभाएँ फिर उभर कर आने लगी हैं। हर क्षेत्र में भारतीय मास्तिक अपनी छाप छोड़ रहे हैं। आज कम्प्यूटर का युग है। सूचना-प्रौद्योगिकी का जमाना है। "करलो दुनियाँ मुट्ठी में" के विज्ञापन भी आने लगे हैं। आज ग्लोबलाइजेशन का समय है। मल्टीनेशनल्स भारत में आ रही हैं। विकास की एक दौड़ मची है। इस अंधी दौड़ के कुछ खतरे भी दिखाई दे रहे हैं। सांस्कृतिक प्रदूषण बढ़ा है। इस समय हमें अपने विचारों में भारतीयता की सुगंध को भरना होगा। तभी हम-हम रह पाएँगे।